**ISSN Print:** 2664-7699
**ISSN Online:** 2664-7702
Impact Factor: RJIF 8.53
IJHA 2025; 7(2): 174-179
www.humanitiesjournals.net
Received: 22-05-2025
Accepted: 28-06-2025

**सर्वेश कुमार मणि**
शोधार्थी, प्रदर्शनकारी एवं ललित कला विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्विद्यालय, पंजाब, भारत।

**डॉ. कुलिन कुमार जोशी**
असिस्टेंट प्रोफेसर, प्रदर्शनकारी एवं ललित कला विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्विद्यालय, पंजाब, भारत।

**Corresponding Author:**
**सर्वेश कुमार मणि**
शोधार्थी, प्रदर्शनकारी एवं ललित कला विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्विद्यालय, पंजाब, भारत।

# नाटक धरती आबा में प्रतिरोध, इतिहास और क्रान्ति

## सर्वेश कुमार मणि, कुलिन कुमार जोशी

**DOI:** https://www.doi.org/10.33545/26647699.2025.v7.i2c.209

### शोधसार
समाज और साहित्य दोनों एक-दूसरे के पूरक होते हैं। साहित्य के लगभग सभी आयामों में समाज और उसके इतिहास की झलक रहती है। नाटक साहित्य की जीवंत विधाओं में से एक माना जाता है जिसका प्रभाव पठन और दर्शन दोनों स्वरूपों में प्रभावशाली रहता है। नाटक मानव जीवन के पारिवारिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ताने-बाने के साथ ही साथ ऐतिहासिक प्रसंगों और चरित्रों को भी संवादों तथा दृश्यों में पिरोकर पुनर्जीवित करता है। नाटककार हृषिकेश सुलभ द्वारा रचित नाटक धरती आबा एक ऐतिहासिक महत्व का नाटक है जिसमें भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन के जनजातीय नायक बिरसा मुंडा के संघर्षमय जीवन को प्रस्तुत किया गया है। नाटक में भगवान बिरसा मुंडा के क्रांतिकारी जीवन और ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध छेड़े उलगुलान आन्दोलन को दिखाया गया है। इस शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि धरती आबा नाटक के माध्यम से यह विश्लेषण किया जाए कि किस प्रकार इस नाट्य साहित्य में इतिहास, प्रतिरोध और क्रांति की अवधारणाओं को समाहित कर सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श प्रस्तुत किया गया है। साथ ही साथ यह अवलोकन किया जाएगा कि बिरसा मुंडा जैसे ऐतिहासिक पात्र के माध्यम से हृषिकेश सुलभ किस प्रकार जनजातीय अस्मिता, अधिकार और स्वाभिमान के प्रश्नों का खड़ा करते हैं। यह अध्ययन बिरसा मुंडा के उलगुलान आन्दोलन और उसके सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रभावों का अध्ययन करेगा।

**कूट शब्द:** जनजातीय नाटक, धरती आबा, बिरसा मुंडा, उलगुलान, इतिहास, प्रतिरोध, क्रान्ति।

## प्रस्तावना
### बिरसा का उदय
भारत वर्ष एक बहु-सांस्कृतिक समाज का देश है। इसमें निवास करने वाली जातियाँ अपने समाज, संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण और संवर्धन सैकड़ों वर्षों से करती आ रहीं हैं जिसका इतिहास यहाँ की मिट्टी में गहरे तक समाया हुआ है। वर्तमान समय में जनजातीय समाज अपनी उसी सभ्यता एवं संस्कृति को बचाने की कोशिश में निरंतर संघर्षरत है। भारत की अधिकांश जनजातीय जनसंख्या मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, झारखण्ड, राजस्थान, छत्तीसगढ़, असम, मिज़ोरम और नागालैण्ड जैसे राज्यों में प्रमुखता से पाई जाती हैं। ब्रिटिश काल में छोटा नागपुर डिवीजन ब्रिटिश भारत का एक प्रभाग था जिसमें मुंडा, उरांव, कोल आदि जनजातियाँ निवास करती थीं, लेकिन छोटा नागपुर का संबंध मुख्य रूप से मुंडा समुदाय से ही रहा है।

इसी मुंडा जनजाति के आदिनायक बिरसा मुंडा भारतीय जनजातियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए निरंतर कार्य करने वाले एक ऐसे नायक हैं जिन्होंने अपने जीवन के कुछ ही वर्षों में सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक विचारों में एक ऐसी ऊँचाई प्राप्त की जिसकी झलक आज भी जनजातीय समाज में देखने को मिलती रहती है। ब्रिटिश हुकूमत में सन् 1905 तक झारखण्ड बंगाल प्रेसिडेंसी का हिस्सा था और जिस समय संथाल, सरदार और मुंडा समुदाय का आन्दोलन हुआ उस समय झारखण्ड बंगाल का ही हिस्सा हुआ करता था। मुंडा समुदाय में मुंडा का अर्थ 'गावँ का मालिक' होता है। ब्रिटिश राज में इस माल्कियत पर चारों तरफ से आक्रमण होने लगे और इसी षडयंत्र के तहत मुंडा सहित भारत के दूसरे जनजातियों में ईसाई धर्म का प्रचार-प्रसार भी प्रारंभ हुआ। इस विपरीत परिस्थिति के दौर में बिरसा मुंडा का जन्म 15 नवंबर,1872 को उलिहातु गाँव में माना जाता है। (Goyal, 2021) [1], इसी क्रम में कुमार सुरेश बिरसा के जन्म के सम्बन्ध में कहते हैं कि "लोक गीतों में ऐसा वर्णन आता है कि धरती आबा का जन्म या अविर्भाव भादो के महीने में हुआ था।" बिरसा का जन्म मुंडा समुदाय के लिए एक उम्मीद की किरण मानी जाती है जो उनके वर्षों के संघर्ष का फल था। बिरसा के जन्म के समय मुंडा जनजाति अंग्रेजों, ज़मीदारों और दिकुओं से अपनी अस्मिता की लड़ाई में जूझ रहे थे। एक ओर जहाँ संथाली समुदाय अपने जल, जंगल और जमीन की लड़ाई लड़ रहे थे वहीं दूसरी तरफ मुंडा समुदाय को एक नायक की तलाश थी जो उन पर हो रहे अत्याचार और अपमान के विरुद्ध मुंडाओं को एकत्रित कर सके। इस समय ही बिरसा एक नायक के रूप में उभरते हैं और मुंडा समुदाय को एकत्रित करते हैं। बिरसा मुंडा अपने क्रान्ति उलगुलान के माध्यम से केवल औपनिवेशिक सत्ता का ही विरोध नहीं कर रहे थे बल्कि वो सामाजिक श्रेणीकरण, जातीय घृणा और भाषिक भेदभाव जैसी गहरी समस्याओं को भी निशाना बना रहे थे। नाटक धरती आबा में अनेक ऐसे दृश्य उभरते हैं जहाँ मुंडा समुदाय के साथ भाषा, व्यवहार और अधिकार के स्तर पर भेदभाव किया जाता है। बिरसा इन सामाजिक अंतरों को बखूबी समझते हैं और उनका तीव्र विरोध करते हैं। उनके लिए यह संघर्ष केवल भूमि के लिए नहीं, बल्कि सम्मान और पहचान के लिए भी है "साहब को आप...महाराजा को तुम...और मुंडा को तू...। नीच समझता है मुंडा को ? सुन रे दिकू, मेरा नाम है बिरसा। बिरसा मुंडा।" (सुलभ, 2010) [2] 'तू' शब्द का प्रयोग केवल एक भाषिक रचना नहीं, बल्कि उस मानसिकता का प्रतीक है जो मुंडा समुदाय को नीचा समझती है। बिरसा इस संवाद के माध्यम से न केवल अपनी पहचान स्पष्ट करते हैं, बल्कि 'दिकू' को चेतावनी भी देते हैं कि अब यह अपमान सहन नहीं किया जाएगा। यह वह क्षण है जहाँ नायक अपने समुदाय की ओर से बोलता है। एक नायक जो सिर झुकाकर संवाद नहीं करता, बल्कि आँखों में आँखें डालकर अन्याय को ललकारता है।

बिरसा मुंडा ने अपने युवा अवस्था से ही अन्याय के खिलाफ़ बोलना शुरू कर दिया था और यही प्रवृत्ति भविष्य में बिरसा को जनजातीय समुदाय का सबसे बड़ा नायक बनाती है। एक समय बिरसा भी बाकी सभी मुंडा लोगों की तरह ईसाई मिशनरी के पास अपनी आरंभिक शिक्षा प्राप्त करते थे। इसके लिए मिशनरी मुंडा लोगों की आर्थिक मदद करती थी और इसी मदद के सहारे उनका धर्मांतरण भी करती थी। नाटक में युवा बिरसा अपनी परम्पराओं और संस्कृतियों के सम्बन्ध में मिशनरी विचारों से सहमत होते नहीं दिखते हैं। बिरसा अपने सजातीय आन्दोलनकारी बंधुओं एवं जनजातीय संस्कारों के विरुद्ध मिशनरी अफवाहों का पुरजोर विरोध करते हैं "तो सरदार मुंडा नहीं हैं क्या ? वे भी तो मुंडा हैं। मैंने समझा था कि फ़ादर नॉट्रेट का जैसा उजला कपड़ा है, वैसा ही उजला मन होगा। पर नहीं।...ग़लत समझा था मैं। मैं तो चर्च, मिशन, क्रिस्तान और उनके प्रभु की प्रार्थनाओं पर विश्वास करता था।...वे मुझे पढ़ा रहे थे,...ज्ञान दे रहे थे, इसलिए मैं उनके सामने झुका रहता था।...पर उन्होंने मेरा भरोसा तोड़ दिया।" (सुलभ, 2010) [2] अपने इस बगावत के कारण बिरसा को ईसाई स्कूल से निष्कासन भी झेलना पड़ता है जिससे उनके परिवार को मिलने वाली आर्थिक मदद बंद कर दी जाती है। लेकिन बिरसा इससे बिल्कुल विचलित नहीं होते हैं और इसी के साथ बिरसा के विचारों में बगावती तेवर धीरे-धीरे परवान चढ़ने लगता है। बिरसा अपने समुदाय की परेशानियों को समझते हुए उनके निराकरण के उपाय सुझाते हैं जिससे मुंडा समुदाय का उद्धार होना शुरू हो जाता है। भुखमरी और हैजा जैसी आपदाओं में बिरसा अपने समुदाय के साथ खड़े होते हैं उनका मार्गदर्शन करते हैं। बिरसा अपने लोगों को आने वाली समस्याओं से रूबरू कराते हैं "बंद कर दो उसे चावल-मुर्गी-खस्सी देना। भूत-प्रेत और मंतर में भरोसा मत करो। बुरा समय आ रहा है इसलिए अपने को मजबूत करो। मन का अँधेरा हटाकर...इस बुरे समय से लड़ने के लिए तैयार हो जाओ।"(सुलभ, 2010) [3] मुंडा समुदाय अपने इस नायक को सुनता है और उसका अनुसरण करके हैजा जैसी बीमारी को हरा देता है। इसी के बाद बिरसा मुंडा समुदाय में भगवान का रूप कहे जाने लगते हैं। सन् 1895 में उलगुलान आन्दोलन की बिगुल

बजती है और बिरसा मुंडा जनजातीय समुदाय के जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा के लिए अंगेजी हुकूमत के खिलाफ़ युद्ध की शुरुआत कर देते हैं । मुंडा समुदाय को एक मार्गदर्शक की तलाश होती है या कहे तो एक नेता की जो उनके समुदाय में व्याप्त कुरीतियों एवं भ्रांतियों को दूर करके समाज को एकत्रित कर सके । मुंडा समाज अपनी कमजोरी और लाचारी के मकड़जाल में उलझकर बिखराव के संकट से जूझ रहा था, एक तरफ ईसाई मिशनरियों के चंगुल में फंसा था तो दूसरी तरफ दिकू लोग मुंडा समुदाय को लगातार प्रताड़ित कर रहे थे वहीं मुंडा समाज की आतंरिक कुप्रथाएँ व कुरीतियाँ उसे दीमक की तरह खोखली कर रहीं थीं । "उन दिनों मुंडा लोग हताशा के चरम दौर से गुजर रहे थे । वे अपनी सामाजिक-सांस्कृतिक व धार्मिक पहचान खोते जा रहे है ।" (सुलभ, 2010) [4] इसी विपरीत परिस्थिति में बिरसा मुंडा ने अपनी युवा अवस्था में ही समाज के तीनों मोर्चों पर एक साथ प्रहार करना शुरू किया जिससे वो अंग्रेजों के साथ साथ दिकूओं के भी नजर में आ जाते हैं । बिरसा मुंडा अपने समाज के लोगों के बीच जाकर उनकी तकलीफें सुनकर, उनके खिलाफ़ हो रही साजिश का एहसास कराकर अपनी बात रखने लगता है । नाटक के बिरसा को धानी के रूप में एक अनुभवी क्रांतिकारी का सहयोग मिलता है जिससे बिरसा मुंडा समाज के भीतरी चेतना को जगाता है और उनके ह्रदय में स्वतन्त्रता की चिंगारी जलाता है । बिरसा अपने समाज और संस्कृति को बचाने के लिए स्वाधीनता का महत्व बखूबी जानते हैं इसीलिए अपने समाज को एकजुट करके ईसाई मिशनरियों के खिलाफ़ खड़ा करते हैं और इसी के साथ उलगुलान आन्दोलन की शुरुआत होती है । नाटक में बिरसा मुंडा लोगों के बीच खड़े होकर इस आन्दोलन को घोषणा करते हैं "हम दखल करेंगे! एक साथ हम पूरे देश भर में लड़ेंगे! आज से इस लड़ाई का नाम होगा-उलगुलान!" (सुलभ, 2010) [2] ।

भारतीय जनजातीय समाज के जागरण और अस्मिता की रक्षा के लिए इतिहास में अनेक प्रयास हुए हैं जिसमें संथाल जनजातीय द्वारा चलाये 'हूल आन्दोलन' का भी नाम आता है जिसका प्रभाव मुंडा समुदाय के उलगुलान आन्दोलन पर पड़ा और इसका जिक्र नाटक धरती आबा में भी आता है । हूल आन्दोलन का नाम लेकर लेखक केदार प्रसाद मीणा कहते हैं " देश के आदिवासी आन्दोलनों के इतिहास में संथाल 'हूल' के बाद दूसरा महत्वपूर्ण आन्दोलन माना जाता है - बिरसा मुंडा का 'उलगुलान' ।" (मीणा, 2015) [5] इस आन्दोलन का प्रभाव मुंडा समुदाय के साथ ही साथ देश के दूसरे जनजातीय समुदायों पर भी पड़ता है । इस तरह बिरसा मुंडा अपने समाज के प्रत्येक व्यक्ति को क्रान्ति के लिए तत्पर करने में सफल होते दिखाई देते हैं । बिरसा मुंडा ने अपने समुदाय को न केवल धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से संगठित किया बल्कि स्वशासन की पुरजोर पहल भी की । जिससे मुंडा समुदाय की अस्मिता को स्वतन्त्र पहचान मिल सके । बिरसा मुंडा के जीवन पर लिखते हुए प्रो.अजहर हाशमी कहते हैं "भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे नायक थे जिन्होंने भारत के झारखण्ड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात किया ।" बिरसा मुंडा एक चमत्कारिक और दूरदर्शी नायक थे जिनकी मुंडा समाज पर गहरी पकड़ रही । नाटक धरती आबा में बिरसा मुंडा एक क्रांतिकारी के साथ-साथ समाज सुधारक की भूमिका में भी दिखलायी देते हैं । भारतीय जनजातीय समाज की विसंगतियों को ओर बिरसा का ध्यान युवा अवस्था से ही जा चुका था और इसके निवारण के लिए बिरसा ने मुंडा समुदाय के सामाजिक और धार्मिक रीति-रिवाजों पर गहरी चोट करनी प्रारंभ कर दी थी । भगवान बिरसा का मानना था कि किसी भी समाज का उद्धार तभी हो सकता है जब वो सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्तर पर एकजुट हो । इस एकजुटता के लिए बिरसा ने सभी धार्मिक विश्वासों को मानने से इंकार करने की पहल की । जिसका समाज में विरोध हुआ लेकिन बिरसा अपने पथ पर अडिग रहे । नाटक में बिरसा मुंडा कहते हैं कि "नहीं पुजूंगा अब किसी को ।...किरस्तान बनकर देख लिया । यीशु की प्रार्थनाओं में अब नहीं उलझने वाला मैं । तुलसी की पूजा नहीं...उस काले कृष्ण की भी पूजा नहीं ।...वह काला ज़रूर है पर काले मुंडाओं का खून नहीं बहता उसकी नसों में ।...और तुम्हें भी नहीं पुजूंगा सिम्बोड़ा ।" (सुलभ, 2010) [3] बिरसा मुंडा उन धार्मिक विचारों का विरोध करते हैं जिनकी अंधभक्ति ने मुंडा समाज का कभी उद्धार नहीं किया । बिरसा का मन ईसाई, हिन्दू और जनजातीय देवी-देवताओं से भर चुका था, जिसके कारण उन्होंने अपने विचारों का संग्रहित करके एक विशेष पंथ की शुरूआत की और इसका नाम 'बिरसाइत' रखा । इससे जनजातीय लोगों में बिरसा मुंडा को लेकर यह विचार बनने लगा कि हमारा मसीहा आ गया है । एक दृष्टि से देखें तो बिरसा ने उलगुलान के पहले अपने समाज को सामाजिक और धार्मिक स्तर पर एक करने की कोशिश की जिससे मुंडा लोग अपनी भाषा, संस्कृति और रीति-रिवाजों से एकाकार होकर उनके बताये रास्ते पर चलने में कोई संकोच या डर ना प्रदर्शित करें ।

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत में चेचक जैसी महामारी ने जनजीवन को बुरी तरह से प्रभावित किया

था, जिसका ज़िक्र नाटक में हैजा महामारी के रूप में किया गया है । "उन्हीं दिनों मुंडा गावों में चेचक की बीमारी फैली । कई लोगों ने इसके लिए बिरसा मुंडा को दोषी मान लिया क्योंकि वह 'बोगाओं' की पूजा के खिलाफ़ था । नाराज लोग तब खुश हुए जब उसके द्वारा बीमारों की देखभाल से लोग ठीक होने लगे । तब लोगों को लगा कि वह सचमुच देव पुरुष है । "(मीणा, 2015) [7] किसी भी समाज को एक नया सवेरा देने के कार्य में अनेक बाधाएँ आतीं हैं जिनसे पार निकलकर ही नवीन प्रभात का उदय होता है । इस विकट समय में बिरसा मुंडा एक चमत्कारिक नायक के रूप में उभरते हैं । अपने लोगों को महामारी से बचाने के लिए बिरसा पूरी तरह से उनकी सेवा में जुट जाते हैं जिसका परिणाम सुखद होता है, लोग ठीक होने लगते हैं और इससे बिरसा पर लोगों का भरोसा बढ़ता जाता है । इतिहास की इस त्रासदी को नाटक धरती आबा में चित्रित किया गया है जहाँ बिरसा अपने समुदाय को जागते हुए कहते हैं कि "मैं चंदन घिसकर उनके घावों पर लेप करूँगा ।...मैं जाऊँगा घर-घर । मैं पत्थर का भगवान नहीं हूँ । मैं जिन्दा हूँ ।...मैं साथ हूँ तुम्हारे । तुम्हारे दु:खों में...तुम्हारी पीड़ा में...तुम्हारे बुरे दिनों में... हर जगह तुम्हारे साथ हूँ मैं । "(सुलभ, 2010) [13] बिरसा मुंडा ने शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए लोगों को जागरूक किया और उनके जीवनशैली में परिवर्तन लाने के लिए संघर्ष किया । बिरसा के प्रयासों से मुंडा समुदाय अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुआ और जल, जंगल एवं जमीन के अधिकारों की मांग करने लगे और इसके खिलाफ़ हो रहे अत्याचार पर आवाज उठाने लगे । इस क्रान्ति में बिरसा के ऊपर अनेक प्रकार के लांछन लगाये गये लेकिन बिरसा ने अपनी जीवटता से सबको एकजुट रखने में सफलता पाई । यहाँ से एक नए बिरसा का जन्म हुआ जिसे लोग भगवान बिरसा के नाम से जानने लगे ।

जल, जंगल और ज़मीन के अधिकारों के संरक्षण के लिए संघर्ष करने वाले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नायकों में से एक बिरसा मुंडा ने अपने नेतृत्व की अद्‌भुत क्षमता के बल पर मुंडा समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक समस्याओं को गहराई से समझते हुए उन्हें संगठित करने का कार्य किया । बिरसा मुंडा ये जानते थे कि सार्थक प्रतिरोध ही सफल क्रान्ति का निर्माण कर सकती है इसीलिए उन्होंने पहले अपने समाज को संगठित किया, फिर हो रहे अत्याचार के प्रतिरोध की ज्वाला जलाई । इस प्रकार बिरसा ने न केवल ब्रिटिश सत्ता की दमनकारी नीतियों का विरोध किया, बल्कि अपने समुदाय में आत्मसम्मान और स्वाभिमान की भावना का संचार कर उन्हें संगठित भी किया "वे मुंडा हैं । उनके खून में भी हमारे ही पुरखों का खून बह रहा है । दिकुओं-महाजनों के हाथों सारे मुंडा एक तरह ही मरते हैं ।...लड़ाई अकेले नहीं लड़ी जाती । हम सबको साथ लेकर चलेंगे ।" (सुलभ, 2010) [2] उनके नेतृत्व में मुंडा योद्धाओं ने अंग्रेजों के विरुद्ध एक संगठित और सशक्त क्रांति छेड़ी, जिसमें मुंडा समुदाय के लोगों ने बिरसा के नेतृत्व में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और अपने अधिकारों की लड़ाई लड़ी । बिरसा एक कुशलयोद्धा एवं रणनीतिकार थे जो युद्ध के नियमों से भलीभांति परिचित थे और इसी कारण उन्होंने अपने समुदाय के लोगों को प्रशिक्षित भी किया था । इस क्रान्ति को दबाने के लिए अंग्रेजी हुकूमत ने भारी संख्या में अपने सैनिकों को युद्ध में झोंक दिया क्योंकि उनको भय था कि इस प्रतिरोध की आग फैलकर दूसरे जनजातीय समुदायों तक ना पहुँच जाए जिससे उनको अनेक मोर्चों पर युद्ध लड़ना पड़ जायेगा । बिरसा एक कुशल योद्धा की तरह अपने लोगों को अपनी शैली में, अपने जंगल में और अपने हथियारों से लड़ने के लिए प्रशिक्षित कर रहे थे । बिरसा मुंडा की कुशल रणनीति का परिणाम यह रहा कि उलगुलान के लिए क्रिसमस का दिन चुना गया, जिससे दुश्मन को सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया जा सके "विद्रोह के उद्घाटन का दिन भी महत्वपूर्ण चुना गया-25 दिसम्बर यानी 'बड़ा दिन' (क्रिसमस) की पूर्वसंध्या । 24 दिसम्बर की रात बिरसा अंग्रेजों के सबसे बड़े पर्व की खुशियाँ वैसे ही छीन लेना चाहता था जैसे उन्होंने मुंडाओं की खुशियाँ छीनी थीं । 24 दिसम्बर, 1899 की रात आग जलते तीरों की बौछार से जगमगा उठी ।" (मीणा, 2015) [9] इस ऐतिहासिक क्रान्ति की आग अनेक दिनों तक अंग्रेजी सैनिकों पर बरसती रही । बिरसा युद्ध कला में माहिर थे ही और उसी अनुकूल जंगल का वातावरण भी था जहाँ बिरसा और उलगुलान की सेना आसानी से दुश्मन का सामना कर सके । बिरसा मुंडा ने अपने सैनिकों को पेड़, पहाड़ और गुफाओं में छिपकर लड़ने का प्रशिक्षण दिया था और यहीं से छापामार युद्ध के द्वारा दुश्मन को अधिक से अधिक नुकसान पहुँचाने की कोशिश की जाती थी । इस युद्ध की घोषणा पर नाटक धरती आबा में बिरसा मुंडा कहते हैं "मैं अकेला कहाँ हूँ । तुम सब साथ हो मेरे । सुनो, ध्यान से सुनो मेरी बात । आज अगहन महीने की दसवीं रात है । पूस महीने के दसवें दिन साहबों का परब है ।...बड़ा दिन का तेवहार । उसके पहले जंगल में, पहाड़ों की चोटी पर, हर दिशा में आग जलेगी । बस इसी आग को देखकर समझना कि अब उलगुलान का समय है ।...नाचो...गाओ ।...इतना नाचो कि जंगल की यह काली रात मिट जाए...तारे उतर आएँ इस डोम्बारी पहाड़ पर...जंगल में बतास भर जाए...आँधी आ जाए... ।"

(सुलभ, 2010) [10] अपनी माटी की आवाज, उसकी पीड़ा, उसका दुःख जब आपके भीतर गूँजने लगे तो किसी भी महाशक्ति से टकराने में जरा भी संकोच नहीं रह जाता है । यही धुन बिरसा मुंडा के ह्रदय में बज रही थी कि जल, जंगल और जमीन पर अपना अधिकार होगा, हम पर हो रहे अत्याचार बंद हो जायेंगे । मुंडा अपने जंगल, अपने आकाश के मालिक होंगे । इसलिए चाहे दुनिया की कितनी भी बड़ी ताकत सामने आ जाए मुंडा उसके आगे नहीं झुकेगा, मुंडा अपने अधिकारों के लिए लडेगा, हार नहीं मानेगा । अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी बिरसा का ह्रदय मुंडा समुदाय की आजादी के लिए धड़कता रहा । बिरसा मुंडा का स्वप्न केवल औपनिवेशिक सत्ता को उखाड़ फेंकना नहीं था, बल्कि मुंडा समुदाय के लिए सांस्कृतिक पुनर्जागरण, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता की स्थापना करना भी था । बिरसा के विचार में उलगुलान की सच्ची सफलता मात्र राजनीतिक दृष्टि से नहीं, बल्कि सामाजिक मुक्ति और मानसिक स्वतंत्रता के धरातल पर भी मायने रखती हैं । इसके लिए बिरसा अपने अंतिम समय में भी अपने लोगों और उलगुलान के विषय में सोचता है "मुंडा लोगों के बीच फिर आऊँगा मैं ।...तुम्हें मेरे कारण दुःख न सहना पड़े इसलिए माटी बदल रहा हूँ मैं ।...उलगुलान खत्म नहीं होगा । आदिम खून है हमारा ।...काले लोगों का खून है यह । भूख...लांछन...अपमान...दुःख...पीड़ा ने मिल-जुलकर बनाया है इस खून को । इसी खून से जली है उलगुलान की आग । यह आग कभी नहीं बुझेगी...कभी नहीं ।" (सुलभ, 2010) [11] नाटक में यह क्षण नायक के भीतर के आत्मसंघर्ष को उजागर करता है, जहाँ वह अपनी सीमाओं और परिस्थितियों की विवशता को स्वीकारते हुए भी हार नहीं मानता है । इस प्रकार महामानव बिरसा मुंडा ने अल्पायु में ही अपनी दूरदर्शिता, कुशल नेतृत्व क्षमता और सहृदयता के बल पर महानता के चरमोत्कर्ष को स्पर्श कर लिया था । आजादी के इस महान नायक को वर्षों तक जनजातीय समाज की ही तरह हाशिए पर रखा गया । लेकिन जैसे सरिता की धारा को कोई बांध रोक नहीं सकता है उसी प्रकार आदर्श चरित्र मनुष्य को ढ़ककर नहीं रखा जा सकता है । उसके व्यक्तित्व का प्रकाश कहीं न कहीं से लोगों को प्रेरित करता रहेगा । आज भी मुंडा समाज के साथ ही साथ सभी भारतीय जनजातीय समाज के नायक और आदर्श योद्धा बिरसा मुंडा हैं ।

## उपसंहार

हृषिकेश सुलभ द्वारा लिखित नाटक धरती आबा एक ऐसे स्वतन्त्रता सेनानी के जीवन पर आधृत है जिनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष और त्याग का पर्याय माना जाता है । जनजातीय अस्मिता, जल, जंगल और जमीन के अधिकारों के संरक्षण का संघर्ष, पलायन, सांस्कृतिक विरासत, मानवीय संवेदना जैसे विचारों से प्रभावित एक मंचीय साहित्य है, जिसमें बिरसा मुंडा के प्रतिरोध और शौर्य की गाथा लिखी गई है । नाटक मुंडा जनजाति के नायक बिरसा मुंडा के माध्यम से जनजातीय समाज की दबी आवाज को एक स्वर प्रदान करता है । बिरसा मुंडा प्रतिरोध और क्रान्ति से न सिर्फ ब्रिटिश हुकूमत के होश उड़ा देते हैं बल्कि सामन्ती विचारों को भी माकूल जवाब देते हैं । लेखक ने इतिहास को सिर्फ तथ्यों तक सीमित न करके उनको वर्तमान की परिस्थितियों को प्रदर्शित करने का वाहक बनाया है । यहाँ ऐतिहासिक पात्र बिरसा मुंडा को नाटकीय रूप देकर उनके जीवन, विचार और संघर्ष को समकालीन सामाजिक संदर्भों से जोड़ा गया है । जिससे नाटक में इतिहास केवल सूचना नहीं, बल्कि प्रेरणा बनकर सामने आता है, जो सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान और सामूहिक चेतना की आवश्यकता को रेखांकित करता है । धरती आबा नाटक इस ऐतिहासिक सच को केवल दर्शाता नहीं, बल्कि जीने और सोचने की दृष्टि प्रदान करता है । यही कारण है कि धरती आबा केवल एक नाटक नहीं, बल्कि इतिहास और रंगमंच का सृजनात्मक संगम है, जहाँ दोनों एकदूसरे को अर्थ-, शक्ति और संवेदना प्रदान करते हैं ।

## सन्दर्भ सूची


1. Goyal, Mukhta. (2021, June). Birsa Munda: Impact on Indian tribal community and his message to the humanity. Life and Movments of Birsa Munda, 92–96.
2. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन । पृष्ठ सं. 29
3. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन । पृष्ठ सं. 22
4. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन । पृष्ठ सं. 38
5. मीणा, केदार प्रसाद. (2015). आदिवासी विद्रोह. अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली । पृष्ठ सं. 112
6. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन । पृष्ठ सं. 70

7. मीणा, केदार प्रसाद. (2015). आदिवासी विद्रोह. अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली। पृष्ठ सं. 112
8. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ सं. 31
9. मीणा, केदार प्रसाद. (2015). आदिवासी विद्रोह. अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली। पृष्ठ सं. 113
10. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ सं. 39
11. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ सं. 78–79
12. मीणा, केदार प्रसाद. (2015). आदिवासी विद्रोह. अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली। पृष्ठ सं. 116
13. सुलभ, हृषिकेश. (2010). धरती आबा. राजकमल प्रकाशन। पृष्ठ सं. 81